GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 1
January-February: 2026

फिनलैंड की माध्यमिक शिक्षा प्रणाली का वर्तमान भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में क्रियान्वयन हेतु चुनौतियाँ एवं सुझाव

नूतन सुकन्या

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ–226025

ई–मेल आईडीः nutan.rs.edu@bbau.ac.in

सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख वर्तमान भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में फिनलैंड की माध्यमिक शिक्षा प्रणाली के क्रियान्वयन संबंधी चुनौतियों एवं सुझावों पर केंद्रित है। क्रियान्वयन संबंधी प्रमुख चुनौतियाँ सही विद्यालय का चुनाव, निजी विद्यालयों की बढ़ती संख्या, विद्यालयी शुल्क एवं विद्यालयों में दी जाने वाली सुविधाएँ, कालखण्ड का समय, गृहकार्य एवं व्याख्यान का आनंददायक एवं रूचिकर न होना, शिक्षकों को प्रोत्साहन एवं उपर्युक्त प्रशिक्षण में कमी एवं पुस्तकालय और अन्य आवश्यक आधारभूत जरूरतों की अपर्याप्तता है। इन चुनौतियों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। भारत में फिनिश शिक्षा प्रणाली को अपनाना मुश्किल है लेकिन ऐसा नहीं है कि हम इससे प्रेरणा नहीं ले सकते हैं और भारतीय शिक्षा प्रणाली को अपडेट नहीं कर सकते हैं, हम आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं और एक महान शिक्षा प्रणाली प्राप्त करने के लिए पहला कदम उठा सकते हैं।

मुख्य शब्दः फिनलैंड की माध्यमिक शिक्षा, भारतीय शिक्षा व्यवस्था।

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्त्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करना वैश्विक स्तर पर सामाजिक न्याय एवं समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण एवं सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत् प्रगति एवं आर्थिक विकास की कुंजी है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020)। 1960 के दशक में फिनलैंड की शिक्षा की गुणवत्ता विश्व के अन्य देशों की तरह थी लेकिन फिनिश सरकार ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के महत्व को समझा एवं इस प्रकार सुधार किए जो फिनलैंड की शिक्षा प्रणाली को विश्व के शीर्ष तक ले गए। भारत एवं फिनलैंड अलग–अलग आकार, आबादी एवं सांस्कृतिक विविधता के साथ दो बहुत अलग देश हैं। यह स्पष्ट है कि यही वह समय है जब भारतीय शिक्षा प्रणाली को इस प्रौद्योगिकी संचालित दुनिया में शिक्षा को प्रासंगिक बनाने के लिए आवश्यक सुधार किए जाने की आवश्यकता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 1
January-February: 2026

भारतीयों एवं फिनिश नागरिकों की प्रति व्यक्ति औसत आय में भी अंतर है, एक छोटी आबादी के लिए फिनिश सरकार गुणवत्तायुक्त शिक्षा के लिए पब्लिक स्कूलों में अधिक निवेश कर सकते हैं। भारत सरकार अभी लोगों की आधारभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए प्रयासरत् है। फिनलैंड में कोई निजी विद्यालय संचालित नही होते हैं। इसलिए फिनलैंड में अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों के लिए सही विद्यालय का चुनाव बहुत सरल होता है, वे अपने बच्चों को नजदीकी विद्यालय में दाखिला दिलाते हैं। हर विद्यालय में समान सुविधाएँ, समान शैक्षणिक योग्यता के शिक्षक एवं कुल मिलाकर सब कुछ समान है, क्योंकि ये केंद्र द्वारा वित्तपोषित हैं। भारत में निजी विद्यालयों की बढ़ती संख्या, विद्यालयी शुल्क एवं विद्यालयों में दी जाने वाली सुविधाएँ शासकीय विद्यालयों से भिन्न होने के कारण शिक्षा की गुणवत्ता भी भिन्न है। अधिकांशतः देखा गया है कि विद्यालयों में दिन का पहला कालखण्ड विद्यार्थियों को आनंददायक एवं रूचिकर प्रतीत होता है एवं विद्यार्थियों को वास्तव में यह समझने में आसानी होती है कि क्या पढ़ाया गया परंतु दिन के अंत तक, आखिरी कालखण्ड में विद्यार्थी इतने थके हुए होते हैं कि शिक्षक द्वारा दी जाने वाली नई जानकारी को उन्हें समझने में परेशानी होती है, भले ही वह विषय कितना भी रूचिकर क्यों न हो। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में लघु अवकाश अथवा ब्रेक होने के महत्व पर कम ध्यान दिया जाता है। किसी एक विषय के कालखंड के बाद अन्य विषय के कालखंड होते हैं। फिनिश शिक्षा प्रणाली ने अपनी शिक्षा व्यवस्था में इस महत्वपूर्ण दोष को देखा एवं उपयुक्त व्यवस्था की ताकि विद्यार्थियों को अगले विषय की कक्षा के लिए अपने मस्तिष्क को आराम देने एवं फिर से जीवंत करने का पर्याप्त समय मिल सके। यही कारण है कि फिनिश शिक्षा प्रणाली में किसी भी अन्य प्रणाली की तुलना में विद्यालय के घंटे कम होते हैं क्योंकि ब्रेक की उपस्थिति के कारण विद्यार्थियों की ग्रहण शक्ति बहुत अधिक होती है।

विद्यार्थियों को गृहकार्य भी इसी आधार पर दिए जाते हैं। फिनिश शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों को खड़े होकर पूरी कक्षा को उनके बैठने की व्यवस्था के आरोही क्रम में पैराग्राफ पढ़ने के बजाय इंटरैक्टिव आधारित शिक्षण विधियों में अधिक विश्वास करती है। व्याख्यान बहुत अधिक इंटरैक्टिव होते हैं एवं व्याख्यान को दृश्य, फिल्मों एवं वीडियो के उपयोग से, और अधिक आनंददायक एवं रूचिकर बनाने का प्रयास किया जाता है, गृहकार्य ज्यादातर कक्षा में कवर किए गए विषयों पर शोध करने से संबंधित होते हैं। भारतीय शिक्षा व्यवस्था को इसे अपनाने की ओर विचार करने की आवश्यकता है। कक्षाओं के बीच में ब्रेक होना एक ऐसा विषय है जिस पर हर विद्यालय को विचार करना चाहिए। साथ ही, केवल जोर से पढ़ने के बजाय अधिक बातचीत एवं दृश्यों का उपयोग करके अपने शिक्षण की शैली को बदलने के लिए शिक्षकों को प्रोत्साहन एवं उपर्युक्त प्रशिक्षण दिये जाने की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। जैसे–जैसे विद्यार्थी

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 1
January-February: 2026

माध्यमिक स्तरीय कक्षाओं में आगे बढ़ता जाता है वह नृत्य, संगीत, कला आदि पर ध्यान न देकर सिर्फ पढ़ाई, काम और असाईनमेंट के बोझ तले दबा हुआ रहता है। यदि हमें भारत में फिनिश शिक्षा प्रणाली को अपनाना है तो हमें इस मानसिकता को दूर करना होगा। भारत में विद्यालयों में मानकीकृत परीक्षण होती है, विद्यार्थियों में विचारों की प्रगति का आँकलन करने के लिए नियमित कक्षा परीक्षण बहुत ही कम विद्यालयों में होती है। फिनलैंड में विद्यालयों में परीक्षा सैद्धान्तिक के बजाय व्यावहारिक अधिक होती है। भारत में किसी भी माध्यमिक विद्यालय में शिक्षक नियुक्त किए जाने के मानक भी बहुत बड़े नहीं होते हैं। खासकर निजी विद्यालय में प्रत्येक माध्यमिक शिक्षक के पास कम से कम मास्टर डिग्री होनी चाहिए यह अनिवार्य नहीं होती है। निजी संस्थान कम वेतन देकर ऐसे शिक्षकों की नियुक्ति करते हैं जिनके पास पर्याप्त शैक्षिक योग्यता नहीं होती है। ऐसे में गुणवत्तायुक्त शिक्षा उपलब्ध कराने में बाधा उत्पन्न होती है। प्रत्येक विद्यालय के लिए तय मानक पाठ्यक्रम है। विद्यालय का पाठ्यक्रम केंद्र या फिर राज्य द्वारा तय किया जाता है।

भारत में शासकीय विद्यालयों में निम्न माध्यमिक स्तर पर शिक्षा निःशुल्क है लेकिन हर विद्यालय राज्य द्वारा संचालित नहीं है और शुल्क भी मनमानी वसूल की जाती है। सभी माध्यमिक विद्यालयों में पुस्तकें, पुस्तकालय एवं अन्य आवश्यक भौतिकवादी जरूरतें निःशुल्क पूरी करना मुश्किल है। इस स्तर पर विद्यार्थियों को रुचि के आधार पर शिक्षा के माध्यम से अपना रास्ता चुनने के विकल्प हैं। परंतु वे ऐसे विषय चयन करना पसंद करते हैं जो उनके सहपाठियों न लिया है या फिर जो उनके माता–पिता व अभिभावक द्वारा चयन करने के लिए कहा जाता है। माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा का विकल्प है फिर भी वे अपने व्यवसायों की पसंद पर व्यावसायिक प्रशिक्षण का विकल्प नहीं चुनते हैं। विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ–साथ अन्य गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित तो किया जाता है परंतु वे चाहकर भी इन सब पर ध्यान नहीं दे पाते क्योंकि माध्यमिक स्तर पर उनमें शिक्षा व भविष्य को लेकर तनाव रहता है। विद्यार्थियों में सैद्धान्तिक व्याख्यान पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है न कि व्यावहारिक ज्ञान पर। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में प्रयोगशाला की भी व्यवस्था नहीं होती है।

भारत में परीक्षा एक निश्चित संख्या में प्रश्नों के उत्तरों को याद करने एवं याद करने की क्षमता पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है। यही बात विद्यार्थियों की समझ को बाधित करती है एवं वास्तव में इसके पीछे के वास्तविक अर्थ को समझने के बजाय रटने को बढ़ावा देती है। अगर हमें भारत में फिनिश शिक्षा व्यवस्था को अपनाना है, तो हमें भारतीय शिक्षा व्यवस्था के परीक्षा पैटर्न को बदलना होगा। वार्षिक परीक्षाओं के स्थान पर नियमित परीक्षाओं को लेना चाहिए। फिनिश विद्यार्थी एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं करते हैं जबकि भारत में इसके ठीक विपरीत है, जहां विद्यार्थी द्वारा परीक्षा में प्राप्त किए गए अंक का प्रयोग

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 1
January-February: 2026

विद्यार्थी की बुद्धि का आँकलन करने के लिए किया जाता है। बोर्ड परीक्षा, एनईईटी, जेईई आदि जैसी मानकीकृत प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों पर कितना मानसिक दबाव बनाती हैं, यह सभी को ज्ञात है। हालाँकि, फिनलैंड के विपरीत, भारत केवल परीक्षा आवेदकों की भारी मात्रा के कारण इन परीक्षाओं को नहीं हटा सकता है। इससे सरकारी आय में भी वृद्धि होती है। भारत में छात्रों को पहले एक डिग्री प्राप्त करने के लिए मजबूर होना पड़ता है और फिर वे सोचते हैं कि उन्हें जीवन में क्या करना है। भारत में फिनिश शिक्षा प्रणाली के मॉडल द्वारा लोगों की मानसिकता को भी बदलना होगा।

भारत में फिनलैंड की माध्यमिक शिक्षा प्रणाली के क्रियान्वयन हेतु सुझाव

कहा जाता है कि हमारे छोटे प्रयास भी जिन्दगी में बड़ा बदलाव ला सकते है ठीक उसी प्रकार हम यदि कोशिश करें तो शिक्षा प्रणाली में भी छोटे स्तर पर कुछ बदलाव ला सकते हैं, इस बदलाव हेतु कुछ सुझाव इस प्रकार हैं–विद्यालय का समय उच्च माध्यमिक स्तर के लिए प्रतिदिन 5 घंटे से अधिक नहीं होनी चाहिए। प्रत्येक कक्षा के बाद, विद्यार्थियों को आराम करने और अगली कक्षाओं के लिए तरोताजा होने के लिए 15 मिनट से अधिक का ब्रेक मिलना चाहिए। माध्यमिक विद्यालयी स्तर पर प्रत्येक बच्चे के लिए गृहकार्य, चाहे वह किसी भी उम्र या ग्रेड का हो, सभी विषयों के लिए संयुक्त रूप से 20 मिनट से अधिक नहीं होनी चाहिए। माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों में विचारों की प्रगति का आँकलन करने के लिए नियमित कक्षा परीक्षण होनी चाहिए। परीक्षा सैद्धान्तिक के बजाय व्यावहारिक होनी चाहिए। प्रत्येक माध्यमिक शिक्षक के पास कम से कम मास्टर डिग्री होनी चाहिए।

विद्यालयों का पाठ्यक्रम शिक्षकों द्वारा तय किया जाना चाहिए। विद्यालयों के संचालन में अत्यधिक स्वायत्तता होनी चाहिए। अप्रचलित राजनीतिक या सरकारी भागीदारी बहुत कम होनी चाहिए। जितना संभव हो सके माध्यमिक शिक्षा निःशुल्क होनी चाहिए। हर विद्यालय राज्य द्वारा संचालित होनी चाहिए एवं इसमें स्थानीय निकाय की भागीदारी सुनिश्चित किया जाना चाहिए और शुल्क को कर में समायोजित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। माध्यमिक विद्यालयों में सभी पुस्तकें, पुस्तकालय और अन्य आवश्यक भौतिकवादी जरूरतें निःशुल्क उपलब्ध कराये जाने के लिए प्रयास किया जाना चाहिए। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की रुचि के आधार पर शिक्षा प्रणाली के माध्यम से अपना रास्ता चुनने के विकल्प होने चाहिए, व्यावसायिक विषयों में विविधता होनी चाहिए ताकि वे अपने व्यवसायों की पसंद पर व्यावसायिक प्रशिक्षण का विकल्प चुन सकें। विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ–साथ अन्य गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों में थ्योरी लेक्चर से ज्यादा प्रैक्टिकल पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। शिक्षा प्रणाली सरकार एवं शैक्षणिक संस्थाओं के लिए मुनाफा कमाने का जरिया न होकर

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 1
January-February: 2026

विद्यार्थियों को अपने विषयों के चुनाव में सभी बुनियादी और आवश्यक कौशल एवं विशेषज्ञता कौशल हासिल करने के लिए प्रयास किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

भारत के पास चुनौतियों एवं कमियों का अपार भंडार है। भारत में फिनिश शिक्षा प्रणाली को अपनाना मुश्किल है लेकिन ऐसा नहीं है कि हम इससे प्रेरणा नहीं ले सकते हैं और भारतीय शिक्षा प्रणाली को अपडेट नहीं कर सकते हैं, हम आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं और एक महान शिक्षा प्रणाली प्राप्त करने के लिए पहला कदम उठा सकते हैं। भारत जैसा देश फिनिश शिक्षा प्रणाली जैसी सफल प्रणाली को अपनाने का प्रयास कर सकता है। बिना इस बात पर समय गवाय कि समाज इस व्यवस्था को स्वीकार करेगा यह व्यवस्था भारतीय परिदृश्य में लागू होनी चाहिए। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि क्या यह व्यवस्था विद्यार्थियों के मन में सकारात्मक बदलाव लाएगी और उनके लिए मद्दगार साबित होगी इस विषय पर हम सभी को चिंतन, मनन और विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. Can the Finnish Education System be Implemented in India. Retrieved from https://icytales.com/the-finnish-education-system-in-india/ (Retrieved on 15/01/2026).